

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुभक्तान्तराय नमोः॥ वैद्यकमनोत्पलः अमावास्या च रिक्ता
 च कारवेला च जन्मभे॥ गंडांता चुरवाश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः॥१॥ नंदामृता ज
 यारिक्ता पूर्णाश्च तिथयः क्रमात्॥ वारत्रयं समावेर्न्यासिथयः प्रतियं न्मुरवाः॥२॥
 तुर्येज्ज्येष्ठमेश्वरे द्वितीयभूमि नंदने॥ चंद्रपुत्रे पंचमश्च देवचार्यतथापमे॥३॥
 दैतपूज्ये च तृतीयश्च शनौषधश्च निंदितः प्रहराद्धं शुभे कार्थ्ये वारवेलेति कथ्यते॥
 ॥४॥ दशम्यां च तृतीयायां कृत्स्नपक्षे परे दले॥ सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विधिः पूर्वद
 ले स्मृतः॥५॥ एकादश्यां च तुर्यां च शुक्ले पक्षे परे दले॥ अष्टम्यां पूर्णिमायां च वि
 धिः पूर्वदले स्मृता॥६॥ मीने चापि द्वितीयां च चतुर्थिं च वृषकुंभयोः॥ मेषकुंभयोः

१
वेद्य

बही कन्याया मिथुनेष्टमी ॥ ७ ॥ दशमी वृश्चिके सिंह द्वादशी मकरे तुले ॥ एता स्मृति
थयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ ८ ॥ सर्पाकारं लिखे चक्रं विवाहे च विनाडिके ॥ अ
श्विनी प्रमुखं च दत्त्वा साम्यं विचारयेत् ॥ ९ ॥ एकनाडि स्थाने च दंपत्यो मर्शं प्रदं
सेवायां च न वेद्वा निर्विवाहे त्वं शुभं न वेत् ॥ १० ॥ हस्तादिपंचके श्विन्या धनिष्ठा येव
पूर्णा ॥ गुरौ शुभे बुधे वारे धार्म्यं सिद्धिर्न वा वरं ॥ ११ ॥ लग्ने मीनश्च कन्या च मिथुने च वृषः शुभः ॥
पुंसां पुनर्वसु द्वेद्वे रोहिण्युत्तराश्वि च ॥ १२ ॥ नवान्न भोजनं ग्राह्यं वृश्चिके प्रोक्तं मत्स्यतः वारे
धिके सूर्यसामौ नक्षत्रे श्रवणं मृगः ॥ १३ ॥ आद्यान्तं प्राप्तने पूर्वासाय्या द्वाव रूपा
यमः ॥ नक्षत्रे युपरित्याज्या वारौ भौमार्कनंदौ ॥ १४ ॥ द्वादशी सप्तमी रिक्ता प्र
मनरा च वर्जिता ॥ लग्ने शुभः रूखे ग्राह्या वृषः कन्या च मन्मथः ॥ १५ ॥ शुक्ले प

क्षः शुक्रो योगसंग्राहः शुक्रचंद्रमाः ॥ मासौषष्टाष्टमौ पुंसां स्त्रीणां मासश्च पंचम
॥ १६ ॥ पूर्वाषाढाश्विनिहस्तत्रयेच प्रवरान्वये ॥ ज्येष्ठाभगमृगपुष्ये रेवत्या चोत
रायरो ॥ १७ ॥ द्वितीयायां च तृतीयायां पंचम्या दशत्रये ॥ सूर्यशुक्रसुरावाप्यवा
रेपक्षे तथा सिने ॥ १८ ॥ लग्ने वृषे धनुः सिंहकन्या मिथुनयोरपि ॥ वृत्तबंधशुक्रो
योगे ब्रह्मक्षत्रविशां च वेत् ॥ १९ ॥ शुक्रित्रये दिति दूंदूमे च हस्तत्रयोत्तरे ॥ भगे वि
धियुगे मूले पूषाश्चैसौ म्यवारके ॥ २० ॥ द्विष्वभावे घटे लग्ने करणवेधः शुक्राभ
वेत् ॥ वैत्रपौषाहरेश्चापंच वं च युगलं त्यजेत् ॥ २१ ॥ मुनर्वस्त्रद्वयं चित्रा विशा
खा भरणी द्वयं ॥ मूलमार्द्रा मघा हेतुप्रवरान् दशमस्तथा ॥ २२ ॥ सोमशुक्रवृ

२
वैद्य

धानारी प्रसूति स्नान कर्मणि ॥ हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथि क्षयः ॥ २३ ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शुभलक्षणदुतकम् ॥ सारंगधरात् ॥ सारंग ॥ सुवि सुलक्ष
न होई ॥ वृषभचढे आवै शुभ ॥ सेतपुष्पकर सोई ॥ वैद्य से के वीले सुशुभ ॥ सुंदर चत
रसु ॥ जात पूर्ण स्वर हि वर्द्धन नर ज्ये त व सन ॥ फल भाति शुभलक्षण पदुत के ॥ अथ रसमं
जरिमन्वात् ॥ मुदा टड जग ॥ धरिले हजु हात अंगारः मुसल धूति ॥ लष्टिका आयुध भस्म
कपाल ॥ १८ ॥ रोम हाड तुचवर्म कर महिष उष्टुर चर रुट ॥ तेल लंगाईः बोहिन कुलव्यो के
ले अंधा मु ॥ १९ ॥ रक्त कलत्र गवानसुत्र शागम शा करेइ ॥ वैद्य हि आवै सन के पंग आगे
पगन धरेइ ॥ २० ॥ अथ सगुनद्विष्ट न चंदन संघः कलसर सोट स्यनवीनः अक्षत अनि
ष्टदवगज कन्या गोवरमिन ॥ २१ ॥ अस्ववर्ष मकुसवर्म नृपसुरं मा मंगलगीत ॥ रूपाता

मावेदुनिपुत्रगुरुचनमित ॥ १३ ॥ सुरसिंहासननेरधुनिः ॥ पुत्रसहितअरुनारि ॥ संसुष
आवैवैद्यके श्रेष्ठसगुनविचारि ॥ इतिसगुनपरिच्छा ॥ अथवंकछरुप्रकरलिख्यते ॥ प्रथमध
रसाचलतीकीनइविर्जनिकलतवजाई ॥ दुजेधररासुषबंधहोशकीर्जनितरनठहराई ॥ ति
जेधररापेसासवरुविर्जनंहावरुजाइ ॥ चौथेधरराकिअपरैः साहुविर्जकयाइ ॥ पावोवेध
ररातिंतलहवैः तातेविर्जनसमाः ॥ छूटेविर्जबंधनहिः जोगशास्त्रकहिगईः अवईनकी
परीक्षा ॥ जवैपुरुषसंगनकरैः तवइस्त्रीदुषेमाथ ॥ तौधरराकीरिजानियेताकोऔषधआ
थ ॥ १ ॥ कोकेकमलवाडीकेपातः हीकरेमाहिजोपीसोरतः वातिरुवरकीअंगुलतिनः
सोऔषधलेपकरोपरविनः वातिधेगमैसोरखवाई ॥ जासचारतहाठहराइः वातप्रात
निकालेजाइः दरउउदरदिनवयमेजाइ ॥ २ ॥ इस्त्रीपुरुषकुनसंगनकरैताकिदेहसकलकी

रे: तो वाकि ओषध रह जान: साख मध्य युक्तो वधान ॥ ३ ॥ हियु जु नित कातेल मगाइ: सा ओष
 धति सघावे जाइ ॥ दरउउदर की सब मीठ जाइ ॥ ४ ॥ तीजे पुरुष पुनि संग मकरै: तव इस्त्री उरपी
 राधरै: ता को मात वधि जानिये: नीश्वे मन मे सो आनिये ॥ ५ ॥ ता को दोरु करे सु जान: सुरगि पित्त न
 वही आनि फल हुवे पीछे दिन दिन ॥ दरदुदर का होवे हीन: सह ओषध प्रसस्त है सहि: कर होनि
 श्वे मन मे यहि ॥ ३ ॥ चौथे पुरुष भोग जब करै: ता कि कमर दुषति रहै ॥ तो उधर रा मे किरा जान: ता
 को दारु करे सु जान ॥ ४ ॥ जीरा सा जिपी पल लेहु: सर्व ये कठि करे के येह: तिर सो ते ल वाति सु लाइ
 सो वाति भग मा हा चलाइ ॥ ५ ॥ दीन वये भग मे येह विध बाल: पुन वाति को लेहनि काल ॥ पुरुष
 संग सो वरु रो करै: स्त्री गर्भ सु सह जे धरै ॥ दोहा ॥ पंचम वर जो भोग कर: पीडी ताह पीडा उ। १ धर
 रा चलि ति सु जानिय ॥ ता को करे उपाव ॥ १ ॥ चौपाइ ॥ हरउ वहेडे साजि सा वंश: सवा पीस ये
 रा वोइ कमरा: वाति रुवउ अंगुलतिन: सो रायो भग मे परविन ॥ वाति इ सोइ नि काल के धर ॥

कैरे अस्मान पुन संगत कैरे सोइ स्त्री ग र्भे धरइ ॥ छुट्ट दिन जव भोग करः मन दयता परसे न हो
इ ॥ देव दोष सो जानियता को दास होइः केसर मुसुकर लाइ विः ॥ गज केसर के कुम जानिः ये के त
रिय सय ॥ गोति वाधो मान ॥ चौ पाई ॥ गोति दोइ ॥ हेता इत दोइ ॥ ता मे गोति राधे सोइ आदित्य
वार का दिन वाधिय इस्त्रि पुरुष के सर वाधिय ॥ देव दोष सो निहवै जाइ ॥ पुरुष सं सो पुनिकर
वाइ मिस इस्त्रि को ग र्भे रहइ ॥ सोइ हवचन कह्यो निषराइ ॥ इति श्री वंज छह प्रकार संपूर्ण ॥
सीव सुत पदरा सो सदा रिधि सीधी नीती देइ ॥ कुमति विना स सुमति करन मंगल मुदिन करेइ ॥ १ ॥
दोहा ॥ अरब अमृत ति अलख गति की नही नयायो पार ॥ जो रिजु गल कर कंवि कहो देहि वैद स
तिसार ॥ २ ॥ दोहा ॥ वैद्य ग्रंथ सनिमथि म कैरवो सुभाषा आनी ॥ अदीषा यो प्रगट करि ओव
धरोग निदान ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मम मति अल्प सुकरत हो कवि मति परम अंगाधि ॥ सुग वि किताः
वनुर विम जैन क्षत्र अराधी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ वैद्य कमनोत्सवना मधरि देवि ग्रंथ सुप्रशास ॥ ॥

४
वैद्य

ला
केसरजसुतनेनसय श्रीवकेकुहिनीवास॥५॥ दोहा॥ प्रथमनसालक्षनकहोदेविग्रंथमत्रिसोड॥
पुआनोअनजावहिजेतिमममत्रिहोड॥ अथसारंगधरनारिपक्षाभाषातिलिख्येते॥ दोहा॥ केरुअं
गुष्टसुसूलदिदेशहनसाप्रकास॥ जानोसुषटुजीयकेप्रडितकरुविचार॥ १॥ आदिपित्तपुरिमवि
कफलअंनीपवसुप्रधान॥ त्रिविधिनसालक्षनकहोजानवैद्यसुजान॥ ८॥ मेडकेकागकुलिंग
गपित्तनसाइहभाइ॥ हंसमयुरकपोतकेकनागजलुकावाइ॥ ९॥ तित्तरखंवटेरगत्रिसोधमनी
सनपान॥ चलैछिनअगितीतहुइनसाकैरहघात॥ १०॥ क्षुधादपलववनिसेइसरत्तेकीजानु॥
स्थिरानप्रकिफनिकहोआमगैत्रिरवयानि॥ ११॥ चलैअरुवेगतपतहुइज्वरलक्षनधमनि
ये॥ करहुविकित्तासमलिकैजीउसुषपावेजीये॥ १२॥ अथपित्तकर्फवाइहेतुनिदान॥
चौपाइ॥ तावमासनसुषणइक्षुधान्त्यालेवहुतअहार॥ कटुलकेतश्रममदनाधान॥ अथपित्तके
॥ सेवैअग्निकोधपरवाना॥ ३॥ उरमसवाइधुपमेगपै॥ आधिरातिदुपदूरिसमै॥ कार्तिके

जेठ आसुन वैसाय ॥ पित्तवे कारप्रगठ केहु भाय ॥ १४ ॥ मधुरदुग्ध दधितिल नवनित्तः
लो नमदाइ पल रुषसित ॥ नोजनतृप्ता ओरुदिन सोवैः फायुन चैत्र से कफ होवै ॥ १५ ॥ वो
लेतु गवा द अमि गहे चिंताय नयान करै ॥ रुवा याइ कटु के निति जागैः संध्या समै सिततनुला
गै ॥ १६ ॥ भक्षण करै कसै लायाइ करै प्रहार वाइत न होइ ॥ दोहा ॥ मंद्य रिपोष माद्य महि श्रा
वण भा दो मास ॥ फनि आवाड पंडित केलो वायुरान घट मास ॥ १७ ॥ अथ पित्त के कवाइ के
लक्षण ॥ चौपाइ ॥ मुख कटु ताया कुल पर लाप मुख अ धर स्व द अरु ताप ॥ मुही दा ध सित पर
पित्त लक्षण सुनहु पित्त के मित ॥ १८ ॥ आलस्य हरु खासि श्वास मिठा दहन मूष को नास ॥ हि आ
भरि गल ग्रह न है कफ के लक्षण एते कहै ॥ १९ ॥ देही पिडा तालु जले आलस डो वासन मै हि उरै ॥
देहि सितत निंदु नाशुः रुवा अंगु व रुज इय ता ह सु ॥ २० ॥ मुख हिन मूष फि कारै हैः उस्न प्रात को पे
ज्वर ग है ॥ नैन कवि जो केलो वषानीः मासत लक्षण ये ते जानि ॥ २१ ॥ आध ॥ पित्त वायु को उपचार ॥

दोहा ॥ वी असंग अरु विजनातिरै सलिल स्नान ॥ भोजन मधुर संग धिता करत कोप पित्त हानि ॥ २२ ॥
 क्षारक से लात कटु तपनो टक उपवास ॥ वसन विवेक न सेव्य पुनि होइ इनह कफ नास ॥ २३ ॥ तपतो
 टक वन उन्नत वमन ते तस रिर ॥ सुरापान से बहि नि इन ते जाइ समिर ॥ २४ ॥ अथ साधे ल
 क्षन ॥ सोरठा ॥ होइ विषाजि सहिन कटु पटना न सुत प्रहि मुदुर सना पर विन सुत लक्षणा ता के क
 है ॥ २५ ॥ चौपाइ ॥ इन्दी अंगुर है चेतन सुष निन्दा आवै सु पु संन ॥ सुभ चित्त वनि सुनै अरु कहै रस
 ना सुख ज्ञान सोर है ॥ २६ ॥ वीनु प्रश्नेद जोर जा को होइ सरल स्ना सुहिन कफ बोइ ॥ करहुं चिकित्सा ता
 को जानी सो नर जो वैह जु वधान ॥ २७ ॥ अथ साधे लक्षणा ॥ दोहा ॥ जाइ सुमो रत पित्त जाइ कफ
 गेह ॥ कफ आवै जव कंठ हि घ्रा नत जेत वेडेह ॥ सोरठा ॥ कंठ विषे कफ होइ नित दाघ फ
 नितित दिनि ॥ मरे ज रोगि सोइ ज कहुन चले उपचारु दिसु ॥ २८ ॥ दोहा ॥ भुष्ट अरु हिन सारु
 कास स्वास पुनि जा सु ॥ व्याकुल हि चिकित्सा जत नित हजम पुरहि निवासु ॥ २९ ॥ दूर पनधि

तजलनेलमहि द्यायेबहु आनि ॥ सिसरहतनदधियेनासपक्ष महि जान ॥ ३१ ॥ मंजनकिने
तिनअगिकरपदयनिहांरुसुकहिति सुततकालसो मुनहोइ विरु चारु ॥ ३२ ॥ करुविचारुदि
पकेउहै आवैकहुनगध ॥ मविनेलज्जादुनीनासहुइता सुलेइजमफेधि ॥ ३३ ॥ अथकालचक्र
लि। धति ॥ आद्य आदिसुअंतमगमद्धि सुलफुनिहाइ ॥ नक्षत्रइंदुरविनामनरयेकसजवहोइ
॥ ३४ ॥ सोरोगिमृतहोइतवजाइजाहो जमधान ॥ सोसिवकहो विचारिकै कालचक्र धरिनाम ॥ ३५ ॥
इति श्री पंडित वैदके सबदास पुत्रेण नैनसुषेन विरचिते वैद्य मनोत्सवे नाडिपरिक्षा वातपित्तक
फेहेर्नुनिदानसाध असाध लक्षणा ॥ कालचक्र नाम प्रथम समंदे ॥ १ ॥ दोहा ॥ हिक्कावीट
ग्रहमुह कासस्वास अतिसार ॥ वीमन अरु अंग जेदतिटु ज्वर पइवदसकार ॥ ३६ ॥ अथपि
नेज्वर लक्षणा ॥ मूर्छा नृया प्रलाप पुनितिरोवर्त नुमवित्त ॥ नेत्रदाघ कपुता चंदनयलक्षणा ज्वरपि
ते ॥ ३७ ॥ अथ कफ ज्वर लक्षणा ॥ स्वास कास रोमांच गुर येहर निद्रा तित ॥ वमन अरु चमुख मधु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ ४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ ५ ॥
सर्वमोक्षदायक ॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमायक ॥ ७ ॥
सर्वविघ्नहर्त्रा ॥ ८ ॥
सर्वसुखदायक ॥ ९ ॥
सर्वसम्पत्तिदायक ॥ १० ॥
सर्वसौख्यदायक ॥ ११ ॥
सर्वसन्तोषदायक ॥ १२ ॥
सर्वसन्निधौ ॥ १३ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १४ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १५ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १६ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १७ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १८ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ १९ ॥
सर्वसमर्पणार्थ ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रत्नराज्यरनासु ॥ ४६ ॥ अथ लघु सुंदर सनु वरा ॥ पावौ पाइ ॥ सोठिकटाइ पुस्कर मुलु कगज
सिंगिक डुकचुर ॥ मुहु लोठि गिलाइ आवना साह सुपर निहल दपि परा ॥ ४७ ॥ सीरव के लौ जि
वाही सुजा नुपित पापरा पत्र सुआनु ॥ अगर धमाहा कुडाइ लोवन वाला मुर्वा पाइ ॥ ४८ ॥ तेजु
पति सुदेव दारेहि ठानु मोथा पठो लनि मुज वायेनु आनु ॥ अगर धमाहा कुडाइ लोवन वाला मुर्वा
पाइ ॥ ४९ ॥ तेजु पति सुदेव दारेहि ठानु मोथा पठो लनि मुज वायेनु आनु ॥ वीचाहुड अत्र यापि
पर मुल स औषध सेलहु समतुल ॥ ५० ॥ नैपालि चीरा यरा जानि सम औषध ते आधा आनी ॥
इरु औषध कोचुर न करहु नाम सुना पर दरसन दल छति सुधरहु ॥ ५१ ॥ तपत रिरति उदि जे घाल आ
ठो ज्वर जाइ ना सेतत काल ॥ दाह्य मोहन न्द्रा न रहाइ उं पाउ रोग कास ला पराय ॥ ५२ ॥ हिया गदि विषा
भुल सब जाये संन्य पात ते ते न न राहाय ॥ अमजुड वाकि रोगन साथे स्वास कोस की पिडा जाये ॥ ५३ ॥ गद
अने कना शहित जानि रहि रहि किचीनु क होव वानि ॥ अथ ज्वरं कुस सिध्यते ॥ दोहा ॥ सोठ मिरि

चअरुपिपैरंके आठपरमारमानु॥ गंधकविष्णुपाराटकहुदोइंकेरुआनु॥ ५४॥ विजयतरेरंके विचपिसहु
ओषधसोइ॥ २२॥ आइकेसो मर्दयकरिगोरिरतिदोयी॥ ५५॥ गोतिषासप्रातउठिरेसअद्राकाघाले॥
तापपित्तवायुके कफवाइके नासहितनेकाले॥ ५६॥ ओः॥ तिजेदुज नित्यके चोपाइ ज्वरजाइः-
सुक्ष्मविषमजुसितज्वरउदरशेगनरहाइ॥ ५७॥ महाज्वरंकुशनामकहिआवेनेग्रहआनि
वैद्यमनन्मवग्रंथहितभाषाकह्योवधानि॥ ५८॥ ओषधसंपटसाहिधरनाकौगजपुटदेहु॥
प्रहरदोइपावकरावियसितलभयसुलेहु॥ ५९॥ अथशिद्धिज्वरंकुस॥ तिपभस्महरनात
समआठटंकलेहुविचारी॥ निलाथोताटंकदोइनिनपुटीदेहुबुरि॥ ५९॥ ५ दोरतिसु
प्रवानुगहिचंडसोदिजेजासुभानुपांडसोपथुदेहोइ॥ सितज्वरनासुः॥ ६०॥ कल्यो ज्वरंकु
सचकमतिपंडितलेहुविचारनासेतापअनेकविधिसिद्धियगटसंसारः॥ ६१॥ अथपित्त

अथ ज्वर दोषाः ॥ पिपरि म म सिल निव फल रस के रे से पाइ ॥ गो लि कि जै पित्त के ज्वर विदो
ष मि पाइ ॥ ६३ ॥ अथ त्रिपित्त ज्वर कहु नु र्ण ॥ सोरठा ॥ पित्त पाप रा आनि जल सो पि जै पित्त के ॥
ठक दो इ पर वन दा घु पित्त ज्वर नार हे ॥ ६४ ॥ अथ पित्त दा घु क ज्वर कहु नु र्ण ॥ चो पाइ ॥ लो
चन बो ला मो ध्या आनु चंदु न पित्त पाप रा ठानु ॥ सो ठि उष स सीर निर स्यो ले हु ॥ दा घ पित्त ज्व
र के रहु ॥ ६५ ॥ काल शान ग्रंथानु ॥ अथ कफ ज्वर कहु ना सु ॥ दो हा ॥ सो ठि निर स का र फल अ
पिपरि ता हि मि ला इ ना स सु लि जै निर सो कफ ज्वर दिन मे जाई ॥ ६६ ॥ अथ वायु ज्वर कहु नु र्ण ॥
सोरठा ॥ सो पि सो च रु पा इ पिपरी सीर की चिरा इ ता ॥ को डी ति वा सर ला चुर न हरे व ज वा इ ज्वर ॥ ६७ ॥
अथ मल ज्वर का थ के हु ॥ ग्रंथ क अरु के नि आ लु सो ध्या को डि हरि त कि ॥ पि वै का थ त त काल म
ल ज्वर कफ को ना स हु ॥ ६८ ॥ अथ तु र्ण रस ज्वर कहु ॥ दो हा ॥ अज सो दा सु हरि त की सो च रु ना
मि ला इ ॥ पित्त पि उ ज त त प्र स्यो र स ज्वर दिन म हि जा इ ॥ ६९ ॥ अथ श्वेत ज्वर कहु उ पाउ ॥ मई न

किजै अंग कहुने ल तिल का लोह ॥ पुन मज्जन जल तप्त सो वेद ताप मिटाइ ॥ २० ॥ अथ दुष्ट ज्वर कहुचु
न ॥ पिपरि मरिच चिरुता शोठि हिं ग स म घालि ॥ चुर्न बाये टंकदुह ताप द्विषि कोटालि ॥ २१ ॥
अथ वायु पित्त कहुचु र्ण ॥ मोथा सोठि चिरुत पित्त पाप डाजानी ॥ पिपरि कोठि गी लोह तु नि
ये सत्र पिसुहु आनि ॥ २२ ॥ ये चुर्न सुप्रसक्त कोहि जल सो पिहै प्राप्ती ॥ अनिल पित्त कफ देखति अ
हाइ हित नै ज्वर घाति ॥ २३ ॥ अथ तित्त ज्वर चुर्न ॥ पीपरि सोठि गी लोह कुनि गुं माता हिमिलार ॥
जल सो पिजै टंक दोइ सित ताप न रहइ ॥ २४ ॥ अथ विषम ज्वर चुर्न ॥ पिपरी हरि रै आवरी वि
त्रक सेंधा सोइ ॥ चुरन पिजै निल सो नास विषम ज्वर होइ ॥ २५ ॥ अथ स्वास कास कफ विषम
ज्वर काथ ॥ पध डिहूट ॥ कटि आइ पुह कर सुलि जानिः सम कर गिलोइ सोठि आनि ॥ ये
ह काथ सुकिजै जल मिलारः कफ स्वास कास ज्वर विषम जाइ ॥ २६ ॥ अथ चोताइ ज्वर धुनि ॥
दोहा ॥ गुगलु उल्लु पंथ फनि स्याम वस्त्र सो मेलि ॥ धुनि दिजै प्रात उठि ज्वर चोथाइ रे लि ॥ २७ ॥

अथ विषमत्वासकासज्वर औषध ॥ मद्ये पिपरः पित्तिकै मधुसौं चाटु आनि ॥ हिक्का कासस्वा
स जोरुं हिं स्निहरा कीहानि ॥ ७७ ॥ अथ सैन्यपात रोग विविक्ता ॥ सौ गरीफ मरिचै पिपर वीष
टंक निमुसमसानी ॥ सो हागा आरु कुं सुगो लि कर हुर ति एक परसानी ॥ ७८ ॥ सो ॥ सैन्य पा
त ज्वर जाइः बातरोग सितांग ज्वर ॥ सो ह सुल पाराइ ॥ आनन्द नैरे वी धि कहि ॥ ७९ ॥ अथ विं
ताम निरस सनिपात कहु ॥ दोहा ॥ गंध के पारा पिपल मरिच जि रा दोइ ॥ पंचलवन त्रय वा विष
अंजु क्र सो ठि जु सोइ ॥ ८० ॥ आटि कर सअम पान को सन औषध पुट देहु ॥ पंचति पर मीत क
रहु गो लि सु म निवधु ॥ ८१ ॥ सचित्तामनिये हु क ह्यो कैरे न सुते निपात ॥ आ म स व वे सिधु
ल क फ होइ विषम ज्वर घाति ॥ ८२ ॥ अथ कनिक सुंदरिरस सनिपात कहु ॥ मिरचे पिपरि
सो ठि विष गंध क कु पारट जानि ॥ टंक टंक क र ति जी एक निक विज त्रय आनि ॥ ८३ ॥

मर्दन किंति नदि नर ससं गे रे पाइ ॥ गुजा सम गो ति कर हु प्रा ठ उ ठि ज व साइ ॥ ८५ ॥ संन्य पात
सितांग क फ हि म ज्व र य ला जाइ ॥ मंदा ग नि उ ट मा द भ्र म र न्य रोग रा र हाइ ॥ ८६ ॥ ध नि यो मे
था चिरा इ ता क दु चं ड न जो जा नि दे व दारु द स मूल से ठि अरु य ज पि प ति आ नि ॥ ८७ ॥ का थ
जु करि कै पि जि ए सं न्य पात ज्व जाइ ॥ ते टा मो ह प्र ला प क फ का स स्वा स जु मि लाइ ॥ ८८ ॥ अ
थ सं न्य पा ट तु र्न क दु ॥ श्री कु ण श्री फ ला हिं य व च से धा को डि मि लाइ ॥ पि ति सि र सो स
सु करु ए ओ व ध स मे भा ग ॥ ८९ ॥ अ जा मू त्र सो पि ति कै के रु अं ज न नै ना हि ॥ मृ गी रोग
उ ट मा द भ्र म सं न्य पा तु न र हाइ ॥ ९० ॥ ति मि र रोग नि अं ध पुं नि भु त रोग ति र वर्त ॥ वै द्य
सु क लो वि चारि कै रु कै रै नि त्त ॥ ९१ ॥ अ थ चू कं ट का टि का थ सं न्य पात क रु ॥ पि प त मू
ल चिरा इ ता शो ठि द रु हि मि लाइ ॥ का थ जु करि कै पि जि ये सं न्य पात ज्व र जाइ ॥ ९२ ॥ अ थ
सं न्य पात क दु ओ व ध ॥ के के म ल वं ग चिरा इ ता अ क्र र के रा सु मि लाइ ॥ पि प रि अ टु क नि र

सोढं क. र. क. जो या ३ ॥ १३ ॥ सैन्यपातउं मादकफत्तेद्रा मरुनकासु ॥ तितश्रुतत्रममोह
ज्वरइरुकोकरैविनासु ॥ १४ ॥ अथअतिसाररोगचिकित्सा ॥ लि। लावतिलिक्षते ॥ चौ ॥
मरिवमस्तंकिदारीमकतिवंसलोचन आवकिगुठलि ॥ लोटमरुठिमाइधाइमाजुंफल
जुमोचरसपाइ ॥ १५ ॥ कुडाजायफलकिकरंफुलाटकविवभागसमतुल ॥ ए सभऔ
वधभागसुचारिपैठे बिजमिहिलिनिधारि ॥ १६ ॥ पोसजलसौगोलि किजैः टंकोरक
परमानवधिजै ॥ तंदुलजसौपिजैआनः ताकेगुनकोसवेवयानिडोटनुमगपथुदेहुजा
सुअतिसारसप्रहुइनासु ॥ १७ ॥ वि॥ वधिगेगाधुरचुर्नकरुअतिसार ॥ मोथाअरतुसुं
ठिसुधाइः विलुपति सुमोचरसपाइ ॥ लोटलु आवतकिआः कुडापिहिइंदुयवलिया ॥
१८ ॥ लोचनवालाफुनिमधुपाइतंदुलजलसोपिउमिलाइ ॥ मगभाटचोजनजवलैइ

अतिसार छिन्नमहिथ जे हेर ॥ ८८ ॥ लघुगंगाधर बुर्न ॥ दोहा ॥ सोंठि धातु कि मा मो चर स अज
 मो दा सुमिला इमि सिद्धा छ सो पि जिरे ॥ अतिसार जुन साइ ॥ १०० ॥ अतिसार ले प कह ॥ अम
 रवि ज अरु जाइ फल वरु फीम सुधा लि ॥ जल सुलेप हुन न पर अतिसार कह जा लि ॥ १०१ ॥
 नागराज दिका थ ॥ ज्वर अतिसार कह ॥ मोथा गिलोइ चिराइ ना सोंठि कुर्छ पतिस ॥ अ
 ष्ठाग जउ का थ करि अतिसार ज्वर पितु ॥ १०२ ॥ रक्त अतिसार का थ ॥ वी ॥ लोचन
 वाला कडा पतिसुः मोथा विलुज सम कर पितु ॥ जा का थ सु करि हिमिलाइ से रणी अतिसा
 र ज्वर जाइ ॥ १०३ ॥ अतिसार गुठिका ॥ दोहा ॥ लोध इंदुय वर स मोथा से प सुधाइ ॥ दि
 जै गुड सों गुथि के अतिसार लहि जाइ ॥ १०४ ॥ आव अतिसार बुर्न ॥ ध से धा सो चर हिं ग
 वच सिव प विसर लाइ ॥ पित पित जल मोन प्रसे आन अतिसार जाइ ॥ १०५ ॥ से ग्रह नि
 निरोग चिकित्सा ॥ धान पंचक का थ ॥ धनियो मोथा सोंठि पुनि बाल विल कथु घालि ॥ का थ जु करि

केपिजियसंग्रहंरिाकरुगलि॥१०६॥संग्रहनिवायुसुलुर्न॥वौ॥मोथासोंठिगिलोयनिस
तपनिरसोपिजियोति॥आमअरुवसंग्रहनिजाइवायेधुलुद्धिनमहिनसाइ॥१०७॥आम
अमरुवीसुसंग्रनिकाथ॥यागीयानदंड॥लोदपटिलजालुमुथाविल्लसोंठिसुजावहे॥१०८॥समपि
सओषधकाथंकिजैप्रातउठि॥धनिआपतिसगीलोइवालाकुंजाधाइसावहे॥समपिसओषधकाथ
किजैप्रातउठिपिजियेःआमधुलुअरुविसंग्रहनिनासुइनहिकिजिय॥१०९॥इमिपेडितवेस्नवकेस
वदासपुत्ररातेनसुवेनविरवितावेद्यमनोत्सवज्वरसेनिपानअतिसारसंग्रहनिरोगप्रतिकारनामहि
नियसमुदेस॥११०॥अथववेसिरोगविकिसातारंगधरसुररावतिका॥होहा॥एकसरिविविश्रुतिः
सुनिविताआठप्रवान॥१११॥दुगुनलोउगुडपाइकेवठिकेरहुंकेदोइ॥वेठअफरागुलुमुगदनास
मवेसिहोइ॥११२॥अथववेसिचुराकरु॥अरलविताइंडजोश्रुतिसेधावेत्॥चुररापिजेतकसोंसे
गमवेसिरति॥११३॥अथचुर्नमवेसिओषधकरु॥सोरथा॥दुधिवडिसुलानिघ्नतलोंगैसोपिजिय

साठ टंकपमानरक्तमवेति न रहे ॥ ११५ ॥ अथ सवेति केचुर्न कहु ॥ सुरनवच अरुमुसलु कुडा सों ठिसम
 भाइ ॥ ११६ ॥ अथ भगंदर रोग प्रतिकार कहु ॥ दंति हतु दिआ वलैपिसहु निरमिलाइ ॥ प्रातसमै लपन कहु
 रोग भंदर जाइ ॥ ११७ ॥ अथ भगंदर ले पुवेंदा नुं ॥ अस्थवी लाइ आनि कै विफलै रस संयोग ॥ ता घसि
 ला ब्रहु जानि कै जाइ भगंदर रोग ॥ ११८ ॥ सेम भगंदर कहु ॥ हिता पदे सादु ॥ सेवा सों ठि सुहर फरनि
 वटि पल्लव सुगिलाइ ॥ जाइ पत्रि घसिलाइ अहिना स भगंदर होइ ॥ ११९ ॥ अथ गुल्म रोग प्रतिकार के
 हु ॥ दोहा ॥ सोवरु सेधा सों ठि हिंग अर्घलो नु फरनि जानि ॥ अमया पिपरि अज मोदा विडंग धार जो अनि
 ॥ १२० ॥ इनको चुर र्ण कि जिये छन तो घाइ मिलाइ ॥ गोला भुल वि सुव का अर्स अजिर न जाइ ॥ १२१ ॥
 अथ आमवात रोग विकिन्सा ॥ सारंग धरार ॥ सरसो सों ठि सहज ना विसव परा सुरदारु ॥ कौजि सों
 अनुलेपिये सो जुव था जुनि वारु ॥ १२२ ॥ विकिन्सा कलिका ग्रंथात् ॥ पिपलितुन आमवात का कहु ॥
 वोपाइ ॥ पिपलि जोठि कपाइ जानिः सों ठि सुअ नया जिर आनि ॥ मोथा चित्ता पिपरि मुलः गज पिपरि मे

लहसमनुल॥१२३॥तप्तनिरसोंपिजैपिसिआमवानवेदननहिदिमि॥भुलअत्रयकिहिनरहोइःषा
सिधोंतिहिनुमहिजाइ॥१२४॥आमवानकहुनुन॥दोहा॥सोंहिबिडंगहरितकिटेवदारुसुमिलाइ॥
तप्तउटकसौपिजिअआमवाननरहाइ॥१२५॥जोगसंतातुनुनआमवानकोकहु॥दालुहरउयेरं
उपुनिपिविडंगपतिस॥मीरिवइंडुजौआनिकेलिजैसमकरिपिस॥१२६॥तप्तनिरसोंपिजियेआ
मवाननरहाइ॥कूमकिपिडाउदरमहिजाहियेजुपरइ॥१२७॥अथजोगसंतातुआमवानकैका
थगुगलुशिवापुणनवादानिनिसाजगिसोइ॥धेनुमूत्रसोकाथलेनासुसोजनिकोहाइ॥१२८॥=
अमरोगप्रतिकारहिनोपदेस॥सैधानिबिबिडंगसुनिपीसहुसमकरिजोग॥तप्तउटस्योपीजिय
नासैकूमकारोग॥१२९॥जोगसंतातुकूमकहुरोगनुन॥त्रिफलानुकुटात्रयविवचनिवत्वचाअ
रुपात॥कुंडांषैरुसुवीडंगसुनिनुनकरहुमिलाइ॥१३०॥धेनुमूत्रमहिपाइकेटांकतिनपरवांनु॥
तप्तदिवसजौपीजियेहोयेउदरकूमहानि॥१३१॥हिग्वादनुन॥पिपरिवैसाहिहिंगसिंधाजि

ए दोह ॥ अजमोदा जलन प्रसौक बहु सुलन होइ ॥ १३२ ॥ शुलरोग प्रकार ॥ सों चरु पुः कर सो ठिहिग
 आनहु सम करि भाइ ॥ पिलि पिउ जलन प्रसौ सुल विसुविका जाइ ॥ १३३ ॥ अथ चूर्न शुल कहु ॥ पि
 परि सों ठि हरित कि सों चरति विसमान ॥ न प्रोढ के स्यो पिजिये ॥ ना स शुल का जाइ ॥ १३४ ॥ अथ
 तुवरणी चूर्न शुल कहु ॥ सोरथा ॥ तुवर पुः कर सुल लवन निन जवायारहिग ॥ अभया लामहि
 चुरुज जसों वानु सुविडंग ॥ १३५ ॥ टंक टंक परमान रुओ यक्ष सम सिजिये ॥ तिविति न टंक जा
 नि इरु को वुररा किजिये ॥ १३६ ॥ न प्रनिरमहि पाइ टंक निन जदि पिजिये ॥ शुलगुल कफ जाइ
 आम वात अधन मगद ॥ १३७ ॥ शुलरोग चूर्न कहु ॥ दोहा ॥ सों ठि मिरे वे पि पोर सज्जी आहि मिलाइ ॥
 पिल पिब जलन प्रसौ शुलरोग न रहइ ॥ १३८ ॥ पाउ वंके लवा उरोग प्रतिकार ॥ विफल को डि विरा
 इता वासा नाव गीलोइ ॥ धोथ सुपि जै महत्त सो ना सुपाउ गद होइ ॥ १३९ ॥ अपांडु कवल वा उरोग के
 रुसव सेरु ॥ त्रिकुटार जनि आवे रे लोह चूर्न सुमिलाइ ॥ वाटहु मधु घृत पाइ के पादु का मला जाइ ॥ १४० ॥

अथ कामलारोग कहु अवलेह ॥ लोहं चुर्न नीफ कुडा दो नोर जनि धाला ॥ घन मधु सो जव वा
 णिये कल वा इति वटलि ॥ १४१ ॥ कवल वा इपोटलि ॥ फल वट मसुपि सि कै करहु पोटलि
 जोग ॥ संध नासि विश्व करी जाइ कामलारोग ॥ १४२ ॥ कामला अंजन कहु ॥ गेहु हट ज आवरे
 करु अंजन नै नाह ॥ कवल वाइ को नास हु मसुर पय जो साइ ॥ १४३ ॥ अथ क्षयरोग प्रतिकार चु
 र्न ॥ अस गंध सो ठि पिपरै लंबं गै मिश्र रि पाइ ॥ जल सो पि जै पीसी क क्षये रोग न रहार ॥ १४४ ॥
 अथ गुठिका क्षै रोग कहु ॥ फुल आ क के लंब न सनि पिस हु सम करि आनि ॥ गो लिटि जै प्रात उहो
 इ क्षै र की हानि ॥ १४५ ॥ अथ क्षै रोग कहु चुर्न ॥ सो ॥ ३ फला सो ठि विडंग निरवे कना जु सो था ॥
 पीपरि मूल लंबं ग देव दारु न जि राइ ला ॥ इति ॥ १४६ ॥ पद्म पत्र अरु रासना गज के सर जु मिला
 अभ तै दु नी मी श्री क्षै रोग सु प राइ ॥ १४७ ॥ इति मंडित वै द्य के सो दास पुत्र नैन सुवेन विर वितं वै
 द्य मनोत्सवे अर्सा न गंदर गुल्म आम वात रुम श्रुत पादु कामला क्षै रोग प्रतिकार नान नृ ति ये

॥ ३ ॥
 मसुपि सि कै

हुचकिरोगप्रतिकार॥ दोहा ॥ विटमयिलिलावरसुसहुदोनोपाइ॥ नाससुजेप्रातउठिहुचकि
 रंगंलि॥ वहरनसा॥ १४८॥ हिचकिकेहुचुर्न॥ मिरचलंवंगअरुतितासुनिगिरिवेलिकिछालि
 मधुसोपिजैपीसीकेहिचकिपिरागलि॥ १४९॥ हिचकिकेहुधरि॥ मनसिलहरदसआनुके
 पिसहुसमकरसजोग॥ वदनसुधुनिसुलिजिएनासैहुचकिरोग॥ १५०॥ अथक्षेदलोगप्रतिकार
 वदनमोथालाइविलाजाकरांलंवंग॥ वेरगिरिअरुकेवलफलगजकेसरसुअंग॥ १५१॥
 इरुकोचुरागकिजियमधुमिसरिसुमीलाई॥ प्रातसमैजववाठियक्षयरोगमिताई॥ १५२॥
 क्षेदरोगकेहुअवलेहुं॥ सो॥ लाजामिनालंवंगकेवलविजअरुलाईवि॥ वाटुमधुकेसंगक्षद
 रोगवाकोनासहुइ॥ १५३॥ सासरोगप्रतिकार॥ चौ॥ सोंठिसुपिपरिककरासीगिपुहकरमूल
 केचुरभांडगिमोथामिरिचजरतप्रसोलेहुमाहास्वासकानासकरेहु॥ १५४॥ स्वासकास
 कोचुर्न॥ पछडिहूँद॥ अडिआइपुःकरमुलजनिवासाअरुतोठिकुलेश्वहानी॥ येपिशीप

पितृनि सो स्या स का स कि जा इ पिर ॥ १५५ ॥ का स रोग प्रतिकार ॥ गो लि बंध कि ॥ सो हि व हे रा पि परे
के के रा श्रं गि जि नि भ ना डं गि सु कां व ह्री लु र स म पा सह आ नि ॥ १५६ ॥ गो लि कि जे नि र सो दे हु टां क स
हो इ ॥ १५७ ॥ गो गि बंध कि ॥ वां स सो ठि पी परे र स पि सह आ नि ॥ गो लि कि जे सह न सो हो इ बं ड कि हा
नि ॥ १५८ ॥ वां सि धा सि चूर्ण कहु ॥ वा सा सो ठि पि परे च व क उ दा इ पा इ ॥ पि स पि व ज ल न प्र सो वा ति
धा ति जा इ ॥ १५९ ॥ व ठि क फ र्को सि कहु ॥ वि ष को डि मि र चै जु सु नि दु ज प । व ति न प्र वा नि ॥ गो
ति मुं उ स मा न करु क फ र्वा सि कि हा नि ॥ १६० ॥ मं दा ग्नि प ति का र ॥ प प रि ति वि ह रि त कि सो ठि
सो व रू पा इ ॥ न प्र ज ल सो पि जि ये मं दा ग्नि जु मि हा इ ॥ १६१ ॥ मं दा अ ग्नि चूर्ण कहु ॥ से धा सि वा
सु पि परे न म हि चि कु घा लि ॥ पि स पि उ ज ल न प्र सो मं दा ग्नि के हु टा लि ॥ १६२ ॥ चूर्ण मं दा ग्नि
ग ज के सर ॥ सो पा इ ॥ से धा सो च ल वा ये वि डं ग न कु ण न फ ला ति वि ल वं ग ॥ चि त्तो हिं गु ज वा इ
न ग नु जि वे दो इ ना इ आ न ॥ १६३ ॥ दु धा कहु गु टि का ॥ त्रि फ ला ति कु ण लो न हिं गु अ र अ ज वा

इरा मेलु ॥ समगुड गो लि कि जिये मंद गि कहुरे लि ॥ १६३ ॥ चून मंद गि गज के सर ॥ चौ पाइ ॥
 संधा सो चल वा ये विडंग न कण न फलाति विलंबंग ॥ वितोहि गुज वाहन गानु जिवे दो रना रदि
 आनु ॥ १६४ ॥ इरु औषध को चूरण कहु जिन पुटे निके धरहु ॥ जं कटो इ प्रात उठि वाइ मंद
 गि न मये पर ॥ १६५ ॥ विषु विरोग पात कार ॥ सारथा ॥ तेल तिल को आनि कर पद मर्दन कि जे
 विषु विका जाइ सिद्धि जोग पंडित के हे ॥ १६६ ॥ विषु विका तिल को औषध ॥ संधा कुपुच कति
 लेने लत प्रकरहु चुन कामल ॥ कर पदन की जे जाइ खाति श्रुत विषु चक जाइ ॥ १६७ ॥ इति जीप
 डित नंद के सो दास पुत्रे शानै न सुवन विर विन वैद्य मनोत्सव हि छा ड्डु ट्यास कांस मंद गि विभु
 विकारोग प्रति कारना मचतुर्थ क समुदेस ॥ ४ ॥ कुरंग बाघ प्रति कार ॥ दोहा ॥ जिरा संधा हिं
 ख धरि कटुक ते ल सुप काइ ॥ लेप जु कि जे प्रात उठि अंड विधि सू मिटाइ ॥ १६८ ॥ अथ अंड रोग
 बहु चुन ॥ चिफला चुन की जीये धेनु मुत्र सो घालु ॥ १६९ ॥ इरंड तेल विहा लु कुनि प छ छत स्या सां

योग॥ प्रातः सुपिजे जानिकै नासे अंडज रोग॥ १२०॥ अथ अंडविध कहलेप॥ मुंह मुंडि दोडि मकलि
से जिरये रंड कुटु निवचहु हचेर मिलाइ॥ कांजिसो जवले पिये अंडसाधन रहइ॥ १२१॥ अथ प्र
ज रोग प्रतिकार॥ मुहुं मुंडि दोडि मकलि सेत काधु मवाड॥ दिनदस चुन कति अले पर उ विहंड॥ १२२॥
चूर्न प्रमये कहु॥ वडिलाइ विषंड समतुरनुं ककुलेहु॥ भोजन किये थिजे कहा करै परमेहु॥ १२३॥
चूर्न प्रमये कह॥ संवा हो लि लाइ विमिला जित समुखंडु॥ सित निर सोपि जिये ले परमे उ विहंड॥ १२४॥
काथ सुया कोपि जिये मिल जित मिसरि घाली॥ मुत्र दूध अरु पथरि फनि प्रमेहि छालि॥ १२५॥
मुत्र दूध कहु॥ ये रंड वासाइ लाइ विपिसहु नुलि मिलाइ॥ दधिसोपि जे प्रात उठि मुत्र दूध जुमिण
इ॥ १२६॥ मुत्र दूध कहुं त्वं द्य चुन॥ सिवा नुलि जव वा रूधरु जल सोपि जिये आनु॥ मुत्र दूध इने
दोष को ना सइ रुहिका जानु॥ १२७॥ मुत्र रोधन प्रतिकार लेप॥ वीष्ट मुंसे कीजु मुनि पावहु जल मे

मेलि॥ नानिजलेजवसेपीओमुवशेधकहुचेति॥ १७८॥ मुत्ररोधनकाथकहुं॥ पदडिछंद॥ गोसूरज
 बांछहस्तकेआनुपमाननदुकेकनिआलजानु॥ येउकाथजुपिजेसहतमेरिसामुत्ररोधककहुंदे
 रेलि॥ १७९॥ मुत्ररोधनवूर्न॥ दोहा॥ निफलासेधागोसूरविजककपाइ॥ तपनिरसोपिजिये
 मुत्ररोधजुरजाइ॥ १८०॥ पथरिरोगकहुपतिकारवृंदसंग्रहान॥ वरुणासांठिगोसूरकाथकरु
 समभाइ॥ पावहुगुडजवधारफुनिवातपथरिजाइ॥ १८१॥ वृंदसंग्रहानपथरिकहुकाथ॥ वरुणा
 अरुणागोसूरसुठिहरदिमिलाइ॥ अस्मभेदकनिआलफुनिसीग्रंधवासमभाइ॥ १८२॥ सुसान्कोकाथ
 अवलहि॥ लोनहिगुवचधारधरिरोगपथरिदेरा॥ मुत्ररुक्षअरुउदरदुसुमगोरगप्रतियरा॥ १८३॥
 पुःकसदिकाथसुगिउन्मादकफविमुविकाकहु॥ पुहकरमुतविराइताब्राह्मीसांठकचुर॥ दा
 लहलदसुरदरवचमोथापिपरिमूल॥ १८४॥ अजयाकुटुमिरसद्वुडकिजेकाथसुआनि॥ सुगि

रोग उमाद कफ पग विरु विहानि ॥ १८५ ॥ मृगि रोग कहु ना सु ॥ सिर चै सेहु दु माहि धरि दिव सोर की
सप्रवान ॥ जल सो लिजिय होइ मृगी किहानि ॥ १८६ ॥ वेद संग हानु ॥ ब्रह्मी रस वच कुटु सुनि संयाहु
लिघालि ॥ गो घृत महिये हु सिद्धी कर मृगी उन्माद हिछालि ॥ १८७ ॥ कृष्ट रंग प्रतिकार ॥ चापाइ ॥
विफला वासान वटेलु पै रंगिलोइ सु सम करि तौलुः चूरन पीजे जल महिघालि कृष्ट रोग नो सेतत को
लि ॥ १८८ ॥ अथ सारंग धरान लघु मजिष्ठा दी क्वाथ ॥ वातरक्त कहु ॥ दोहा ॥ मजिष्ठा च फलादि
कटिरज निनीवगी सोइ ॥ देवदारु वच पिसिके कांठा कीजे सोइ ॥ १८९ ॥ प्रातः ठिजव पिजिये वात के
न रहाइ ॥ अस क मंडलु पा मगड केड कृष्ट जुमिछाई ॥ १९० ॥ सेठ कृष्ट कहु लेप ॥ महिर ॥
गुंजा नीव कुटु वच चिय मस पिसु मेरे मिवा ॥ लेप तु कीजे कांजि आन सेत कृष्ट नाहि नूजानि
॥ १९१ ॥ स्वेत दाग कहु लेप ॥ दोहा ॥ मल्लिखल बिबुवा ववि उगे न समि साइ ॥ कांजि सो जीते
पीये स्वेत कृष्ट न रहाइ ॥ १९२ ॥ स्वेत दाग कहु लेप ॥ सो अग्नि ललत आनि लेप कहु पुन जाते

के॥ ज्वेतदागकिह निसिद्धियागनैनाकहो॥१९८॥ कटुककूर्च॥ न विनिवदति अरु जो
 वलारलाये॥ ८॥ कनिमगोसुत्रसोपिवेनवन जाये॥१९९॥ अथ लेपपात्रकह॥ निरिचि अरु सिद्ध
 रपुनिमहविषीनसंजोग॥ मथिकेलेपजकिजियेनासै पातु जोग॥२००॥ लेपपात्रकंडकह॥
 गंधकचोक्विडंगफुनिसिंगरिफुकेरुसुजानि॥ हरदपडसिंदुरसुनिपिसुसुसुनकरिआन
 ॥२०१॥ कागजनिवनावलरसलेपहुइनेहिसिलाइ॥ पात्रदादुविचचिंकायेनेरोगनसा
 इ॥२०२॥ पात्रकेहलेप॥ गंधकेहरदमिलाइनिलाथोतावावचि॥ सजिवोकरलीइ
 सजनेदुगुरापवधरि॥२०३॥ कुटुकैनेहिसहपाइमदनकिजेतिनदिनमहिवि
 गोवरहोइनासैपात्रअनेकपिधि॥२०४॥ पात्रकेडकह॥ दुवहरदसमपिसिक्कैले
 पहुजलसेजोग॥ पात्रदादुअरुखसरगदनामहिहसनेरोग॥२०५॥ लूनकह॥

वैपाइ ॥ वंदन कट सनाल पाइ कवलसा सारि वाय सम नागले प्रसु किजै जल महि
द्यालि ॥ लेप जु किजै निरसो थि भ रोग नर हाइ ॥ लुन वृथा छिज माहि सुटा लि ॥ २०२ ॥
स्थि भ रोग प्रतिकार ॥ दोहा ॥ कट लि पात कि भस्म करि नाम महि हरद मि लाइ ॥ लेप
जु किजै निरसो थि भ लो ग नर हाइ ॥ २०३ ॥ थिं न रोग कह लेप ॥ पड डि छेद ॥ वेदन ह
र ना तु क पुर ढानि ॥ सा हा गो मु लि विज आ नि ॥ जं भ रिस सा ले प लाइ ॥ सो थिं न रोग छि माहि
जाइ ॥ २०४ ॥ थिं न रोग कह लेप ॥ सो ॥ गंध व क चंदन आनी नि वेर स सा ले पियः ॥ दिव स सा न
पर वान थिं न रोग त न नार ह ॥ २०५ ॥ नारु आ रोग प्रतिकार ॥ दोहा ॥ अर्ध दूध कर सि पि काट
धि सो पि जै सोइ ॥ निज औषध पंडित क ह्म ना तु नारु बा होइ ॥ २०६ ॥ सस्त्र घात का औषध ॥ का
क जं घा को मु ल कु टि सस्त्र घात महि द्या लि ॥ रक्त प्रवाह सु नि र ना सहि जै त न का ल ॥ २०७ ॥ सस्त्र

इति श्रीपंडितवैद्यकेशवदासपुत्रेनैव नभुवेन विरचिते वैद्यमनोत्सवे कुरडप्रमेये सुत्रकक्षभुले
 शोधनमृगीकुष्ठकंडपामडविषविकाथिचनारुवासस्त्रघातप्रतिकारसामपंचमसुटसह॥ ॥
 वातरोगप्रतिकार॥ ६॥ ८॥ असंगंधिशुठितिलस्यामजनि॥ समतुलिसुधिमैरुधंडआनि॥ इ
 ह औषधलिजैघृतमिलाइ सो वातव्याधिछिन्हि जाइ॥ २०८॥ वातचूर्णकुरु॥ भैरवसिंहालुभैरव
 रमुठितामहिपाइ॥ चूर्णदिजैकंदुइ वातरोगनरहाइ॥ २०९॥ गुठिकोवाइकुरु॥ चौपाइ॥ पिप
 रिवित्रकअसंगंधिजानिः विषकविडंगअजुवाइनिआनि॥ सोठिकेलौजिपिपरीमूलरऔषधमे
 लसमनु॥ २१०॥ दुशोगुडसोगोलिकरुणकंडोइपरमान॥ सुधरुपातउठिकैगोसिंवाइवायेजुवौ
 शतिनरहाइ॥ २११॥ वाइपिडाकुरु॥ दोहा॥ सोठियरंडवातनादेवदारसुगुलोइ॥ काठौपिजै
 पाठउठिपिदावाहनहोइ॥ २१२॥ लघुविसर्गभतेलवायुकोकुरु॥ चौ॥ मीठानेलसेररकआनि

तुलिधतुरेकारसआनि॥गुंजाविषधतुरवियोठांकसुपावसोतिया॥२९३॥विधिसोतेतकिजे
आनिलघुविसगभतेतइहजानि॥मर्दनदेहिकिजेलाइवायुजुवोरसिनरहाइ॥२९४॥वा
येकंठेकहु॥सोथा॥आहोलसनहिकुठिधिरकरहुगोदुग्धसो॥वायुसीहडिठिनीनासेआकेउ
अंगका॥२९५॥वायुसर्वकहुवृंदसंगहानुआयोसागुमुसु॥दोहा॥मालकागुनिरतनाआसगे
धिसोठिमिलाइ॥तीवीभंखदेसोकहेसोठिसतावरिसोइ॥२९६॥अजवाइनसमपिसिकैसम
समगुगतपाइ॥अनभागगोष्टुसोगोलिकरहुमिलाइ॥२९७॥पित्तप्रकोपप्रतिकार॥पटडि
छंद॥इलाचिकपुरउषसतिरठानुआवलासुचंदनतुल्यिआनि॥येपिसिजुपिजेहिजलमिला
इसोपित्तकोपधिनमहिजाइ॥२९८॥दाद्यकहुलेप॥देवेठिपतयचवआवरोनंडलउ
सुरलाइ॥जलसोतपहुवरनधुगदाद्यपीउनरहाइ॥२९९॥दुर्दुवाकिचुनकहु॥पिसिह

१८— शकवलफल अरु उलाचि द्वासु ॥ सीत निरसोपि जिये छुट्ठ वा किटाल ॥ २२० ॥ दाद्य वृथा लेप
केहु ॥ कास थाल महि निरसो सो वार घृत धोइ ॥ लेप करु फुनि दान दाद्य वृथानहि होइ ॥ २२१ ॥
कफ कोप प्रतिकार ॥ केसर मिरचै पिपरे भांडे गि अरु जीनी ॥ मारतां वलुवांग सुनिरस मपि
सहुनि ॥ २२२ ॥ पानहु सो जवयाइ एपर सित टंकु सुआधि ॥ कफ सासि अरु स्वास ज्वर होइ है
कावाधि ॥ २२३ ॥ कफ केहु चूर्न ॥ लवंग भिरीगी पिपरे सो ठि कटाइ पाइ ॥ पिसि पितु जल न प्रसो
कफ सासि नुप लाइ ॥ २२४ ॥ गंड साला रोग प्रतिकार ॥ पिपरि अरु कववर फुनि विफला सम
करि ठानि ॥ पिसि पितु जल न प्रसो नासुह जि राजानि ॥ २२५ ॥ लेप हजिरा केहु ॥ भारंगि अरु
सो ठि फुनि तंदुर जल मेहि मेलि ॥ कंडु जया कोल पुकरि कंठि नह जि राजलि ॥ २२६ ॥ मुख रोग
प्रतिकार चूर्न मुख पाक केहु ॥ नवाधिर इलाइ चि न्यो जे काथुर लाइ ॥ मुख नहि मेलुहु पिसि के

वटनपाकमिष्ट ॥ २२७ ॥ ता ॥ दातसो लोहयेने का दाह ॥ रस वांसे को घृत सुनिमथहु जु दोनो
सो ॥ सुंखें जं। प्रातहि चोटे सात दिन दांत रक्ताहार ॥ २२८ ॥ दंत किट रक्त प्राबाह पिडा करु ॥ वासा
मो था काथ पुनि के अरु जानि ॥ लोह मजिठ मिला इके पिसहु सम करि आनि ॥ २२९ ॥ ए
औषद दसनही मलीहुर रक्त गमन साधा ॥ पिरा किट क प्रवाल दुग्नि मुख विच पर ॥ २३० ॥
मुख पाक करु ॥ विफला दाघ गिलो इ पुनि चंवे लिजु मिला ॥ दारह द अरु पात सुनि ए
लिजे हि सम भा ॥ २३१ ॥ काथुज किजे पिसि कै कर सि करु मुख पा ॥ वटन पाक अ
रुंध नाय ना सहित त कि लि ॥ २३२ ॥ काला कि औषध ॥ सरसौ सधा लोध ववय औषद स
म आनि जल सो वटन मुले पिए यज कि काला जानि ॥ २३३ ॥ औषद छा इ करु ॥ छालि राति
लुत्था मजिर सरस्व पिस सुनि ॥ पये सरु लेपहु जाम मुख कि छ इ नारहे ॥ २३४ ॥ सिंधालोड

पुकुटहरदस औषदसमभाइ ॥ नीवुरससोलेपिये मुख किछाइ जाइ ॥ २३५ ॥ नासको रोग प्र
 तिकार ॥ दुवकुसुं जाहरित किदा डिमपुल्लरलाइ ॥ सितनिरसो नासदेर रक्तगमन सोयाइ
 ॥ २३६ ॥ पिनसस अरुमिस बल कहु ॥ सोंठिमिरचै अरुपिपेरै गुरुसोयाइ आनि ॥ पिनस
 सेहरसिसदुषुनासुजुहूको जानि ॥ २३७ ॥ नासपिनास कहु ॥ मरिचै अरु ~~पिपेरै~~ दूरिपर
 मितरु कहु ॥ नासुजुलिजे नीरसोपिनस पाडोरै लि ॥ २३८ ॥ नेचलेप रोग क
 हु ॥ रसौं तीलो नुहरित किगेरुहरदमिलाइ ॥ जलसोकपरलेपिये नेचरोग जुमिताइ ॥ २३९ ॥
 अंजन नेचरोग कहु ॥ कानिगल अरु जस्तपुनि मेह दिससं जाग ॥ लौवन अंजन किजिए
 हरैनको रोग ॥ २४० ॥ अंजन लोध कहु ॥ सुरमारज निजुगमगहि जातिरस संवधा ॥
 नैनहु अंजन किजिए होइ ~~इ~~ बलानिस अंधा ॥ २४१ ॥ अंजन रन्यो धे कहु ॥ सावनवे

२० ठिपाइ॥ रसवंतिहालिवहरदफुनिलोडफीमसुमिलाइ॥ २५०॥ एओषधसमआनिवैकर
रुपोटलिपीसी॥ सर्वपिरकोनासहुयनेनहिनिर्मलदेस॥ २५१॥ अंजननिमरफोलेवाये
कहु॥ सुरसासेधासंपुफुनिमनसिलुत्रेकुआनिकानिगफलुअरुमिसरिसागरफेन
समानि॥ २५२॥ अंजनद्वोभिदुधसोनिमिररोगनरहाइ॥ फोलाघोरावाउनिनेनपि
रजमिणइ॥ २५३॥ कर्नरोगप्रतिकार॥ देवदारुवचसोठिफुनिसेधासोफलाइ॥ अ
जामुत्रसोतप्रकारिकानवि॥ थाजमिताइ॥ २५४॥ मिररोगप्रतिकार॥ वातसिरवर्त
लेपकहु॥ देवदारुकुक्काथफलुसेरउतलमिलाइ॥ काजिसोंजवलेपियेरासोधाआनि॥
नप्रनिलसोसिसलाइ॥ छिनमाहिकफजसिरवहिसाइ॥ २५५॥ पित्तसिरवर्तकहुलेप॥
चंदनसेवाकसेरदुवउमिरसुआवरे॥ कवलबीजहउवेरुपित्तसरोजुनासहुये॥ २५६॥

रोवालि कै तीतु अंनु नै न्ना ॥ जाला फे लानि स आधा एनी मि वष विवु न रहाइ ॥ २४२ ॥ पड
 वार कहु ॥ नि र्वै गेरु लो नै गुड इति नो स स आनि ॥ जल सो लेयो पाडि के सय पड बाले जानि
 ॥ २४३ ॥ रग दाने व पिडा कहु ॥ सेंधा अरु कटु ते ल फुरनि का स पत्र महि जाइ ॥ करि रग डा अंजन के
 रहु नै न पिर जु न साइ ॥ २४४ ॥ अंजन क वल वाइ कहु ॥ पारा जस्ता सिंगि सरि मोति सुगा जा
 नि ॥ ठाक छरु छरु लिजि स यहइ रुको परवानु ॥ २४५ ॥ कर जट सनु अरु चाक सु फाहि
 इरु हिमिलाइ विय जु करेह ॥ कवल वायु को सहु ये दुग्ध भात पथु लेहु ॥ २४६ ॥ कर र वा
 य जगडा कहु ॥ मज पारा अरु जस्ता सुनी निला या पा आनि ॥ पिसि चुना फट के डिसा गर फेल
 समान ॥ २४७ ॥ का स पात्र महि रग डि घृत गो का गुड मिलाइ ॥ निसारा तनु अंजनु किजि
 ये कवल वायु न रहाइ ॥ २४८ ॥ पोतु लिने वरोग कहु ॥ जि रा काहि फल के डि वी फल सो

त्रिदोषसिर्वर्तलेपकहु॥ कुटुमिरिव अरुकाइ फल सें रउ कि जउ घालि॥ तप्तनिरमोले
पियसोसिर्वर्तहिणालि॥ २५८॥ सिरवर्तलेपकहु॥ पिपलिसि रिव हरित कि ये निनो
समभाइकाजि से निलेप करि पिरासिर कि जाइ॥ २५९॥ आधासिरलेपकहु॥ मरवाके
सरनिरसिउ करहु नासउ ठिपात॥ आधासिसिसि स दुषवारन लागै जानि॥ २६०॥ कुटु
पिपरै सारिकरुववमहसोहि जानी॥ कजि से निलेप करि आधासिसि हानि॥ २६१॥ छतसोस
धापिसि के नासले रुपरे नानि॥ सिद्धि योग सर्वा यो कलि आधासिसि जानी॥ २६२॥ केसवर्ध
उनु औषधकहु॥ तिल फुल अरुगे॥ घरु छन मधुपामहिपाइ॥ केसलेप जो कीजिये दुरवधै अ
धिकोइ॥ २६३॥ सिरकि कारिको औषध॥ आनिक कोउ पिसि जउ करसमिपट धितासु॥ पा
इसिसमजनु करहु होइ जकरुको नास॥ २६४॥ इंदुल प्रलेपकहु॥ हस्तिदंत कि भसूक

रितामहिरसोतरलाइ॥ देलिययेसोलेपियेइंद्रप्रसिद्धाइ॥ २६५॥ कल्प॥ लोचुर्न अरु भंग
 रनिलुपवफलतिन॥ अजामुत्रसोलेपियकल्प रहेवहुदिन॥ २६६॥ इति श्रीपंडित केशवेदा
 सपुत्रैर्ननेन सुषेन विरचिते वैद्यमनोत्तवे वायुपित्तकफगलमुषनातिको केशकेश
 सिररोगप्रतिकारयष्टमसमुद्देश॥ ६॥ इति रोगप्रतिकारयेरकेरु औषध॥ गजकेसरतवा
 विरफुनिचंदुनवालापाइ॥ तंदुलजलसोपिजियेप्रदररोगजथंभाइ॥ २६७॥ अन्यथा॥ गज
 कुंभतंदुलसितापिजेनिरमिलाइ॥ प्रदुरेगकानासयेमसुरकवसालिजोयाइ॥ २६८॥ पुष्यहो
 नेकहु॥ सोठिमिरचेपिपरैबुंलडंडिफुनिपाइ॥ निलकेकाथसोपिजियेहोइपुष्यअधिकाइ॥
 २६९॥ पुष्यहोनेकेरुवर्तिका॥ त्रिवीजजवायारगुडकनामैनफलआनि॥ दंतसेहुंडदुग्ध
 सोवाताकरहुसुजान॥ २७०॥ भगमहिरायेप्रातउठिहोइपुष्यतिसुनारि॥ औषधयेहुज

प्रसस्त है कलोज पर उगार ॥ २०१ ॥ गर्भ होने कहें ॥ सिरस कुटिले जाइ फल सागर फेन
मिलाइ ॥ वाइवि उंगइ लाइ विगज के सरसम भाइ ॥ २०२ ॥ जल से गो लि कि जिय टंके टंके
प्रमान ॥ पय सो पि जै यसात दिन येह औषध हित जानि ॥ २०३ ॥ वंध्या गर्भ जु होइ पूर्व जानि
दोय स भजाइ ॥ सालि मुहु गो विरछत येह फुनि पथ कराइ ॥ २०४ ॥ गर्भ होने कहें औष
ध ॥ बोधाइ ॥ मिरचै सो ठि पि परै ठानि गज के सरजु कण्ड आनि ॥ गोछत सो जो पि जै नारि
ता को गर्भ रहै तत कालि ॥ २०५ ॥ गर्भ होने कहें औषध ॥ सोरथा ॥ गज के सर असि गंध
मिला गु सेवन सह फुनि ॥ पय सो पि वै वंधि होइ गर्भ तत सुनि ॥ २०६ ॥ अन्य व ॥ गज के
सर गो सर्प सो रिनु अंति करि पान ॥ गुग्गुलु जानु भोजन करै होइ गर्भ तत जानि
॥ २०७ ॥ धेनु दुग्ध सो लक्ष्मण करै पान सो नारि ॥ नासुले इरितु अंत फनि होइ गर्भ तत

[illegible]

दुनु मेस ॥ विरस डिज उपाइ के सि कन माइ रे लि ॥ २८५ ॥ अन्य व ॥ न फला तो उ धातु कि ज मुनि न
चा ज क सोइ न ग माहि ले पो स हत स्या विधि कु मारि होइ ॥ २८६ ॥ अं न्य व ॥ सो र था ॥ गो को म
छा ज आनि धो वे यो नि प्रा त उ ठि होइ सं को च न ज नि सि धि जो ग पं डित क हो ॥ २८७ ॥ अर्थ
जो ति न ग सं को च न कहु ॥ दो हा ॥ क ल्लुरि ओ र फ पुर स म गो रि क र म धु पाइ ॥ यो नि वि च
व रा षि ये चि कि सी क ने जा इ य ॥ २८८ ॥ अर्थ जो नि दु र गं धि ना ना स होइ ॥ आ न दु रु ये व
हु पि य ॥ २८९ ॥ अथ कु च क ठि न करे रा कहु ओ ष ध ॥ अ स गं धि म रु वी ग ज क र रा वं च क
ने र कु ठि सो ये ॥ ले प जो कि जै नि र सों क ठि न हों हि कु च जा नि प्र ग न जो ग पं डित क हो
॥ २९० ॥ अर्थ ना स कु च क ठि न कहु ॥ सो र था ॥ ज ल नं ड ल को आ नि ना स ले र रि ति
दि ख स हि क ठि न हों हि कु च दोइ ॥ जा नि प्र ग न जो ग पं डित क हो ॥ २९१ ॥ अथ जो ष

धरहेला कहें ॥ दोहा ॥ निसा कुधारित प्रकरि कुच उपर सुधरेहु ॥ थन हेले काना सहोइ सिद्धि जो
 ग जानेहु ॥ २२२ ॥ अथ पुरुष विविदि श्रो ॥ विजया अर्क केनेर जउर संधतुरे पाय ॥ गोलिकि
 जे हूँ पिसि कैलि जे हूँ उ सुवाय ॥ २२३ ॥ पुरुष मुन सो पिसि कै करहु लेप ॥ इन्द्र डिध कठि कै
 स्थल हुइ देखति भागे ॥ २२४ ॥ अथ लिंग स्थल करहु ॥ औषध ॥ वंवा कंठ अरूप पलि असु गंधी
 बल सु होय ॥ जैस मखन सो ले पिये लिंग मुसल सो होये ॥ २२५ ॥ अथ लेप वृषि स्थल करहु ॥
 अस गंधि पारद गज करण जमिसान मिलाये ॥ लेप मुकि जे लिंग पर वृषि स्थल करऐ ॥ २२६ ॥
 अथ लिंग दृढ करण ॥ उं डे पठे करहु लेप ॥ मिठा फिरम सुजाद फल विजधतुरे लोह ॥ घन सोइ
 दी लेप करि सित लिंग दीढ होये ॥ २२७ ॥ अथ स्थंभन कि औषध ॥ आदि फिरम जुआनि
 कै करै वर्तन का जोग ॥ लिंग छिड महिर विय बहुत कत करै नर जोग ॥ २२८ ॥
 अथ मदन प्रकास चूरा ॥ नाल मखाना मुसलि भुठि भवडे पाय ॥ कौ हूँ विज अस गंधि पुनि वल

उलमिलाय ॥ २२ ॥ बालासंतावर मोचरसंफुल्लिलसुजानि ॥ मितादुग्धसों जोपियवहुति अ
रमेनिदान ॥ ३०० ॥ अथ कामप्रगासगुटिका ॥ कुंकुमशिं गरिफ जाइफल नालमसों रापाय ॥
कोचविजतजमस्तकि अकरकराहसुरताइ ॥ ३०१ ॥ नयरुल्लोंगत मालयति नइनप्रसा नि ॥
तिनजागयसिजियेयकफिमयरवानि ॥ ३०२ ॥ रसविजयागुटिका कररुपरमितठंकेथु
येक ॥ सैनसमेनछनकरैललनिनिरसेअवक ॥ ३०३ ॥ अथदुरगंधिहरणप्रकार ॥ वो ॥
चंदुनरजनिमेकयरलोदअगरपदमाषनपुर ॥ छदमुखागजकेसरपहपकिजउअवले
लाय ॥ ३०४ ॥ देहिमर्दनकिजैज्यसुहुइदुरगंधिताछिनसहिनासु ॥ पिनदोषसमनासहिजा
जिबर्कयंथतेकलोवषानि ॥ ३०५ ॥ अथवगलबंधकरुसेप ॥ दोहा ॥ मोथावेलरु
रितकिओरअम्वलिपाइ ॥ लेपकरैनरनिरसोवगलबंधजुमिणय ॥ ३०६ ॥ अथगुटि

२४

कामुहुदुरंगं धिता कह ॥ वेलथनेलाइ चिजा पत्रिते जपाइ ॥ गज केर स भरु जाइ फल ए औषध सम
भाइ ॥ ३०७ ॥ गोलि करतु मधिर सो सैन करतु मुख चालि ॥ आनन किदुरंगं धिता ना सहोइ तन का
लि ॥ ३०८ ॥ अथ दुरंगं धिता कह लेप ॥ वीपाइ ॥ गज के सरपट्टि जउ पाइ ॥ दस मु. वेल. पाउर
अगे थ. गिन्यारि. सुना पाति. गोखल. भटके टैया. वन जाय. सवि. पृथिवन. मिरस पति. अरु लो
धुमिलाइ ॥ जल सो मर्दन किजे गत अति दुरंगं धिता दिन महि जाति ॥ ३०९ ॥ अथ मिर किदुरंगं धि
ता कह लेप ॥ वंदन मोथा वति ह्वालि दा मुक चूर ॥ जल सो पावहु मिस महि होइ दुरंगं धिता दुर ॥ ३१० ॥
परी मित ग्रंथ समूह सम मम मिते सो जर पाइ ॥ औषध रक्ते सुते गेहे किय प्रगट सें सार ॥ ३११ ॥ वैद्य मनो
ल्लव ग्रंथ महि कहो वैद्युन आनि ॥ दुष घेउ न पुनि भुष करण आनंद यय हि निदान ॥ ३१२ ॥ केस
जसुत नैन भुष किये ग्रंथ अनिके दु ॥ सुभल गगन गर सिहरंद महि अकवर साह निरंदु ॥ ३१३ ॥ ॥

करहाये को सवे थो कपित्ति धूयुदि मा छारि फूकि दिनु सरी जाई तैत को ने सदिनु विन
३२०४

आगेशा शायनमः ॥ करवा ने ल माना आधा ॥ रुमिमल कि नौला २ ॥ नु नौला ४
मुदी संव नाला आधा ॥ से तो घयर नौला २ नीम को ने ल नौला २ साल वृ प नौला २
नीला नु थो नौला आधा ॥ मई न नौला ४ सु पारि न स नौला ५ यती थो क से वे
एक वै बल गरि के प हान गुनु तैल मई न या कया पछि हो दि दिनु र प काई मत ३
माई को दुध माना ४ दु म लि को नौ र नौला ५ मा प का उ नु र ए काई स गो
लि पान र ए का र दिन यान सा जे व्या हानः दुद नाग पथ दिनु अरु था क न व
नितु का तैल माना ५ उ थ को वि चो भ स नौला ए के मा प का उ नु र आंग मा द म न

२५

अंकवेदरसमेदिनिसुकलपहृवेमासतिथिदुतिआ नृगुवासेनेपुष्यचंद्रसुप्रगासा॥३५४॥ मात्रा
 अंकसुहृदुफुनिकलोअलपमतिहोर॥ गुनजनशमैसवारिहोहिनजहाकहुहोये॥३५५॥
 कियोप्रगठिदधिमथिकैऔषधरोगनिदान॥ सकलशुधासनकग्रंथइहकलोसमापतिआनि
 ॥३५६॥ इति श्रीवैद्यमनोत्तवपंडितकेतवदाशुपुत्रेणानेनसुखेनविरचितेवैद्यमनोत्तवेस्त्री
 रोगपुस्तकयोगविकित्ताअनिसप्तमसमुद्देशे शुभम्॥ संवत् १८७१ साल आदौ शुद्धिद्वारेज ३ शुभम्
 लेखक श्रीवदरमिंहवावु

ASHA ARCHIVES

3508